बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (EMOTIONAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD)

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) (p. 87) का कथन है- "**सम्पूर्ण बाल्यावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं।** ये परिवर्तन किस प्रकार होते हैं और इनका बालक के संवेगात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है।

1. बालक के संवेग अधिक निश्चित और कम शक्तिशाली हो जाते हैं। वे बालक को शैशवावस्था के समान उत्तेजित नहीं कर पाते हैं; उदाहरणार्थ, 6 वर्ष की आयु में बालक का अपने भय और क्रोध पर नियंत्रण हो जाता है।

2. बालक के संवेगों में शिष्टता आ जाती है और उसमें उनका दमन करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। अतः वह अपने माता-पिता, शिक्षक और बड़ों के सामने उन संवेगों को प्रकट नहीं होने देता है, जिनको वे पसन्द नहीं करते हैं।

3. बालक के संवेगात्मक विकास पर विद्यालय के वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है; उदाहरणार्थ- आदर्श, स्वतन्त्र और स्वस्थ वातावरण उसके संवेगों का परिष्कार करता है, जबकि भय, आतंक और कठोरता के वातावरण में ऐसा होना असम्भव है।

4. बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षक का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। अप्रिय व्यवहार, शारीरिक दण्ड और कठोर अनुशासन में विश्वास करने वाला शिक्षक, बालक में मानसिक ग्रन्थियों का निर्माण कर देता है जो उसके संवेगात्मक विकास को विकृत कर देती हैं।

5. बाल्यावस्था में बालक विभिन्न समूहों का सदस्य होता है। इन समूहों में साधारणतः पारस्परिक घृणा, द्वेष और ईर्ष्या पाई जाती है। बालक इन अवांछनीय संवेगों से प्रभावित हुए बिना नहीं बचता है। अतः वह दूसरे बालकों के प्रति अपने व्यवहार में इन संवेगों को व्यक्त करने लगता है।

6. एलिस क्रो (Alice Crow) (p. 61) के अनुसार- बालक अपने दोषों के परिणामों को सोचकर चिन्तित हो जाता है और अपने से अधिक भाग्यशाली बालकों से ईर्ष्या करता है। वह अपने प्रति परिवार के सदस्यों के व्यवहार को कठोर मानता है, क्योंकि उसके विचार से वे उसके कार्यों को समझ नहीं पाते हैं।

7. एलिस क्रो (Alice Crow) (p. 61) के अनुसार- "**बालक सामान्य रूप से प्रसन्न रहता है और दूसरों के प्रति उसका विद्वेष अस्थायी होता है**।"